प्रकाशन तिथि : 01 जनवरी, 2023
प्रेषण तिथि : 04 जनवरी, 2023
'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 20 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

समाज की चाह है श्री क्षत्रिय युवक संघ का विस्तारः संरक्षक श्री

(राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मनाया 77वां स्थापना दिवस)

इस कार्यक्रम में जिस उत्साह से आप आए हैं, वह देखने लायक है। आप खुद आए हैं, अपने परिवार को लाए हैं। दिल्ली जैसे शहर में ये उत्साह प्रशंसनीय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ अब आगे के लिए विस्तार योजना के अनुसार कार्य कर रहा है। अब तक जो किया गया है, उसमें ये उत्साह समा नहीं रहा है। लोगों के इस उत्साह को रोका नहीं जा सकेगा। इसीलिए अब इसको विस्तार देना है। आज का कार्यक्रम उसी विस्तार का एक अंग है। श्री क्षत्रिय युवक संघ आप सब का आह्वान करता है कि आप अपना कर्तव्य समझकर इसमें सहयोगी बनें। हमने जो रास्ता चुना है उसमें समाज को अपना केंद्र बनाया है। परंपरा के अनुसार रक्त के गुणों पर हमारे स्वभाव निश्चित होते हैं और स्वभाव से हमारा कर्म निश्चित होता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

संघ में है परम तत्व का सम्मिश्रणः सरवड़ी

(जाम कंडोरणा, मुंबई, पुणे और हैदराबाद में समारोह पूर्वक मनाया स्थापना दिवस)

संस्कार का निर्माण कहां होता है? बच्चा जन्मता है तब से लेकर जब तक वह घर के बाहर नहीं जाता तब तक संस्कार निर्माण करती है माताएं। क्योंकि माताएं आज वह काम कर नहीं पा रही है, इसलिए एक दूसरी माता खड़ी की गई श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में। कहते हैं कि जितने भी प्राणी मात्र हैं, जड़ और चेतन भी, उनका अंतिम लक्ष्य है ईश्वर तक पहुंचना। बिंदु का अंतिम लक्ष्य है सिंधु तक पहुंचना। वह ईश्वर तक पहुंचने का काम कैसे हो सकता है? श्री क्षत्रिय युवक संघ हमको बताता है कि गीता में जो ज्ञान दिया गया है उसको अपने जीवन में उतार लो।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संगठन से शक्ति का अर्जन करके संसार के हित में लगाएंः संघप्रमुख श्री

(उत्तरप्रदेश के महोबा में मनाया श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस)

इस बुंदेलखंड की धरा पर, शूरवीर आल्हा उदल की इस पवित्र भूमि पर आज श्री क्षत्रिय युवक संघ का 77वां स्थापना दिवस मनाने के लिए आप सभी लोग दूर-दराज से इस कड़ी धूप की तपस्या को सहते हुए यहां पर विराजमान हैं, आपके हृदय में उपजे क्षत्रियत्व को नमस्कार है। आप लोग आए हैं इस स्थापना दिवस को मनाने के लिए लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ है क्या? इसके नाम में जो तीन शब्द हैं - क्षत्रिय, युवक और संघ, इन तीन शब्दों के अर्थ में यदि हम जाएंगे तो हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ का भाव पता चलेगा, इसका वास्तविक अर्थ पता चलेगा, इसके होने का मतलब पता चलेगा। पहला शब्द है - क्षत्रिय। क्या है क्षत्रिय? हमारे शास्त्रों के अनुसार यदि हम देखेंगे तो केवल उस राजपूत कुल में, राजपूत मां के गर्भ से जन्म लेना मात्र क्षत्रिय होना नहीं है। हमारे शास्त्रों में आया है - क्षतात त्रायते, इति क्षत्रिय। जो क्षय से बचाने का कार्य करता है, नष्ट होने से बचाने का कार्य करता है, वही वास्तव में क्षत्रिय है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है - परित्राणाय साधूनाम, विनाशाय च दुष्कृताम्। जो दुष्ट जनों का संहार करता है, सज्जनों की रक्षा करता है वह क्षत्रिय कहलाता है। हम देख लें कि हम इसका कितना पालन कर पाते हैं। हम कितने क्षय से रक्षा करने वाले हैं, हम दूसरे लोगों को बचाने में, दूसरों की सहायता करने के लिए कितना उपस्थित होते हैं?

(शेष पृष्ठ 2 पर)

श्री क्षत्रिय युवक संघ

ए-8, तारानगरा, झोटवाड़ा, जयपुर-302012,
दूरभाषः 0141-2466353
E-Mail: sanghshakti@gmail.com

22 दिसम्बर 2022

नववर्ष सन्देश

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक मात्र संस्था है जो अपने कार्य को साधना मानता है। इसीलिए बिना शोर-शराबे, शान्त और चुपचाप अपना कार्य 76 वर्ष से कर रहा है। पूरे भारत वर्ष के क्षत्रियों को अपने संगठन के माध्यम से एकजुट कर के समाजसेवा, राष्ट्रसेवा ही नहीं अपितु मानव व प्राणीमात्र की सेवा में लगाने का अपने स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देता है। यह संस्था एक मात्र ऐसा संगठन है जो न सरकारों के विरुद्ध है न किसी राजनीतिक दल के विरुद्ध है, न किसी अन्य समान उद्देश्य व मार्ग वाले संगठन के विरुद्ध है।

अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा युवक-युवतियों को भारतीय मूल्यों के आधार पर संस्कारित करने में जुटा हुआ है। व्यवहारिक, चारित्रिक अमृत पान कराता जा रहा है। समाज, राष्ट्र तथा पूरे संसार में कुछ अपसंस्कृतियों द्वारा विषपान करा कर जगत के लिए पतन के गर्त में जाने का अज्ञानपूर्ण कृत्य किया जा रहा है, संघ ने उसके विपरीत बीड़ा उठाया है, अभियान चलाया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ निर्भय होकर निरन्तर लोक सम्पर्क, लोक संग्रह और लोक शिक्षण द्वारा आसुरी प्रवृति को जड़ मूल से उखाड़ फैंकने का सतत् उपक्रम चला रहा है। अपने मन सहित सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण किए बिना यह संभव नहीं हो सकता। तदर्थ ऐसा विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। दम्पतियों को संस्कारित किए बिना सन्तान (भावी पीढ़ी) को संस्कारित नहीं किया जा सकता अतएव वह प्रशिक्षण भी चलता ही रहता है।

संस्था के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने भगवान श्री कृष्ण की गीता को हृदयंगम करके पूरा दर्शन हमें सौंपा है। गीता का उद्घोष-

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।4/8।।

और

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।2/37।।

क्षत्रिय के लिए रामबाण औषधि है। अपने धर्म व कर्म की रक्षा का एकमात्र उपचार है। आओ हम सभी इस उद्घोष को स्वीकार कर संघ के सततरवें वर्ष में प्रवेश करें तथा परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह सभी को सुख शांति व समृद्धि प्रदान करें। इति शुभम्।

जय संघ शक्ति।

(भगवान सिंह)

समाज की चाह है श्री क्षत्रिय युवक संघ का विस्तारः संरक्षक श्री

(पेज एक से लगातार)

तो आपके अंदर सोई हुई रजपूती, आपके अंदर सोया हुआ क्षत्रियत्व है, उसी को अब बाहर प्रकट करना है और वह कब होगा? नियमित अभ्यास करना पड़ेगा, निरंतर करना पड़ेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसी ही एक प्रणाली है। एक ही जगह पर शाखा लगती है और तय समय पर शाखा लगती है। यह नित्यता और निरंतरता है। यह हमारे स्वभाव में लाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ना आवश्यक है। यह कोई पार्ट टाइम जॉब नहीं है। यह जीवन भर का उद्देश्य है जो भगवान ने निश्चित किया है। क्षत्रिय हो तो क्षात्रधर्म तुम्हारा स्वभाव है, स्वधर्म है, स्व-कर्तव्य है, उसका तुम पालन करो। यह हमको कहां पढ़ाया जाता है? उपर्युक्त बात माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने 22 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के 77वें स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि अभी तक हमारे आदरणीय नेता लोग, भारत की आजादी के बाद से ही, विदेशों में देख करके आते हैं कि वे लोग क्या कर रहे हैं। वे लोग बम बनाते हैं और उनको विकसित माना जाता है, जो लोगों को कर्ज दे करके अपने कब्जे में करते हैं, उन्हें विकसित माना जाता है। यह प्रणाली हमारी नहीं है। मैं किसी पार्टी विशेष का नाम ना ले करके यही कहूंगा कि मेरे दृष्टिकोण से हमारे नेताओं को भारतीयता से कोई लगाव नहीं है। जब समझ में आ जाए कि अपना है तो फिर उसका दर्द कुछ और बन जाता है। हमें ऐसा दर्द जब तक हमारे देश के प्रति, हमारी मान्यताओं के प्रति, हमारी संस्कृति के प्रति नहीं होगा तब तक देश विकसित नहीं हो सकता है। लोग उसको विकास मानते हैं कि पैसा कितना है, उद्योग कितने खुले हैं, सड़कें कितनी बन गई हैं, बांध कितने बन गए हैं लेकिन आदमी इंसान बना है कि नहीं बना है, इसकी अभी भी कोई फिक्र नहीं है। मैं बहुत जगह जाता हूं, सब लोग शिक्षा की बात करते हैं। लेकिन वे कौन सी शिक्षा की बात कर रहे हैं? तब मुझे बोलना पड़ता है तो मेरी बात लोगों को सुहाती नहीं है। देश अभी आजाद हुआ ही नहीं है, मुझे ऐसा लगता है। ना विदेश नीति हमारी है, ना राष्ट्रीय नीति हमारी है, ना कोई आर्थिक नीति हमारी है, कुछ भी तो नहीं कर पाए हैं। अपनी सुविधा के लिए संविधान को बदल डाला लोगों ने, जिनसे हम उम्मीद करते हैं कि हमारा कल्याण करेंगे, यह हमारे राष्ट्र के लिए अच्छे कानून बनाएंगे। जो प्रशासन चलाने वाले लोग हैं और न्यायालय के लोग हैं, सब पर पानी फिर गया। कहीं कोई इंसानियत दिखाई नहीं पड़ती। कहीं-कहीं कोई सितारा सा चमकता हुआ नेता भी दिखाई देता है, कहीं-कहीं कोई न्यायालय का आदमी भी अच्छा दिखाई देता है, कहीं कोई प्रशासनिक अधिकारी भी अच्छा दिखाई देता है, पर बाकी सब तो पाटिया साफ है। उन लोगों से हम क्या उम्मीद करें? इस देश में रहना है तो रहेंगे तो उनके साथ ही, लेकिन हमारी सभ्यता को हमको ही बनाना पड़ेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही काम कर रहा है। जो शिक्षा पाठशाला में नहीं मिलती, वह शिक्षा यहां मिलती है। संघ का शिक्षण कहता है कि निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता। अपने आप को बनाओ, पूरा जगत बन जाएगा। उसमें थोड़ा समय लगता है, थोड़ा नहीं बहुत समय लगता है पर श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि डटे रहो। हम मर भी जाएंगे तो भी यह काम आगे बढ़ेगा। हम आखिर मर करके भी यहीं आने वाले हैं। यदि हमने यही जीवन जिया है तो हमारे यही संस्कार रहेंगे और हम वापस इसी काम में, इसी देश में आकर के जन्म लेंगे। हमारे लिए कितनी सुखद बात है कि हम भारतवर्ष जैसे देश में, मानवीय मूल्यों वाले, दूसरों के लिए जीवन दान देने वाले ऐसे देश में पैदा हुए हैं। दूसरा, हम ऐसी कौम में पैदा हुए हैं जो दूसरों के लिए शीश दान भी देना पड़े तो हिचके नहीं। यह हमारे पूर्वजों का इतिहास है। लेकिन धीरे-धीरे कुछ खामियां भी आई। जिस धरती को माता मानते थे उसके वह धणी बन गए, यह भाव ही गलत हो गया। इस समाज के हम सेवक हैं, पुत्र हैं, उस समाज के भी धणी बन गए। व्यक्ति थोड़ा सा कुछ बना और वह मालिक बनने की कोशिश करता है, चाहे वह अधिकारी हो, चाहे नेता हो। श्री क्षत्रिय युवक संघ यह नहीं करता। वह तो कहता है कि समाज को कभी विकसित करने की, सुधार करने की बात मत करना क्योंकि समाज हमारी मां है। मां का ना विकास होता है, ना उसको सुधारा जाता है, उसकी बंदगी की जाती है। तो इसको बंदगी समझें। इसके लिए कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बिना सिर के लड़ाई लड़ रहे हैं। जिनके पास कुछ भी नहीं है लेकिन समाज के लिए अपना जीवन दान दे बैठे हैं, जो केवल समाज के लिए ही जी रहे हैं। इसी प्रकार का एक संगठन श्री क्षत्रिय युवक संघ है जिसका आज हम यहां स्थापना दिवस मना रहे हैं। आपके जीवन में, आपके हृदय में, आपके अंतःकरण में वह स्थापना हो जाए यह मैं आशा करता हूं। एक व्यक्ति का चिंतन सबको पीछे चलने के लिए विवश कर देता है। एक से अनेक और अनेक से एक - यह प्रक्रिया है श्री क्षत्रिय युवक संघ की। तन सिंह जी ने अकेले ने यह विचार किया और अपने जीवन को लगा दिया उसमें तो धीरे-धीरे लोग उनके पास आने लगे। आकर के उन्होंने इस एकमत को स्वीकार कर लिया और एक से अनेक हुए फिर अनेक से एक हुए। हम पूरे भारतवर्ष में वही अभियान चलाना चाहते हैं और उसमें सभी के सहयोग की आकांक्षा है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ के नई दिल्ली स्थित आवास पर आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली शहर एवं आस पास के क्षेत्र में रहने वाले समाजबंधु परिवार सहित सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि जो गीता में बताए गए क्षत्रिय के मूल सात गुण है उनको आचरण में ढालने का प्रशिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ देता है। व्यक्ति स्वयं में बड़ा साधन होता है, उसे यदि अपने आप का उपयोग करना आ जाए तो शेष सभी साधनों का वह सदुपयोग कर सकता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ यही सिखाता है। उन्होंने संगठित रहकर चुनौतियों का सामना करने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें किसी भी परिस्थिति से मुंह नहीं मोड़ना है और सभी परिस्थितियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है। महेंद्र सिंह सेखाला ने कार्यक्रम का संचालन किया। केन्द्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव, रेवंतसिंह पाटोदा, प्रांत प्रमुख रेवत सिंह धीरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने जोधपुर के भूंगरा में हुई गैस दुखांतिका के सभी दिवंगतों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

संगठन से शक्ति का अर्जन करके संसार के हित में लगाएं: संघप्रमुख श्री

(पेज एक से लगातार)

पूर्वजों की भांति हमें भी साधु जनों की रक्षा करनी है वह चाहे किसी भी धर्म का हो, चाहे वह किसी भी जाति का हो, चाहे वह किसी भी राष्ट्र का हो। और यदि धर्म का नाश करने वाला है, दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति है, वह चाहे मेरे घर में पैदा हो गया हो उसको भी सजा देना मेरा कर्म है। ऐसा करने वाला ही वास्तव में क्षत्रिय है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सज्जनों की रक्षा की बात करता है चाहे वे संसार के किसी भी कोने में रहते हों, संसार की किसी भी जाति के वे लोग हों। लेकिन उसके लिए शक्ति की आवश्यकता है और उस शक्ति का निर्माण संगठन से होगा। जो संघ शब्द है श्री क्षत्रिय युवक संघ के नाम में, उसका यही अर्थ है। संघबद्ध होकर ही शक्ति का निर्माण संभव है। क्षत्रिय और संघ के बीच में आता है युवक। युवक क्या है? वास्तव में युवक कोई उम्र से नहीं होता। श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि जो अपने उद्देश्य में प्रवृत्त होता है, अपने उद्देश्य के लिए त्याग करता है, वह युवा है। जिसमें उत्साह है, वह युवा है। चाहे उसकी आयु कितनी भी हो। ऐसे युवाओं का निर्माण श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। सरल काम नहीं है। देना, त्याग करना सरल काम नहीं है, बहुत कठिन काम है। जेब से अगर एक रुपया भी किसी को देना हो तो सोचना पड़ता है, समय देना हो तो सोचना पड़ता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उस त्याग को सिखाने का काम करता है। संघ कहता है कि निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता। यदि संसार को बनाना है, संसार को उठाना है, संसार को राह दिखानी है, संसार को बढ़ाना है तो पहले स्वयं को बढ़ना होगा, स्वयं को तैयार करना सीखना होगा और जब स्वयं करना प्रारंभ कर देंगे तो इस संसार को भी प्रेरणा दे सकते हैं। हमको शक्ति का अर्जन करना है और फिर संसार के हित में उसे लुटाने का प्रयास करना है। यह श्री क्षत्रिय युवक संघ का मुख्य कार्य है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में महोबा स्थित महाराजा छत्रसाल स्टेडियम में 22 दिसंबर को आयोजित श्री क्षत्रिय युवक संघ के 77वें स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पूज्य तनसिंह जी के मन में आज से 76 वर्ष पूर्व इस प्रकार का चिंतन जगा कि आज हमारी युवा पीढ़ी कहां जा रही है, हमारा क्षत्रियत्व कहां है, हमारी रजपूती कहां भटक रही है, हमारे शूरवीरता कहां गई, हमारा वह तेज कहां गया, हमारा वह त्याग कहां गया। चिंता करने और चिंतन करने में फर्क है। हम सब लोग चिंता करते हैं, चिंतित होते हैं लेकिन पूज्य तन सिंह जी ने उसके लिए चिंतन किया और जो लोग चिंतन करते हैं वह अपने जीवन में कुछ ना कुछ कर जाते हैं। इसलिए पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की थी वे जानते थे कि जो चीज अनुपयोगी हो जाती है उसे फेंक दिया जाता है। हम इस प्रकार से अगर गिरते ही जाएंगे तो हमारी भी यही स्थिति होगी। क्षत्रिय जब तक उपयोगी था, समाज ने हमको सर पर बिठा कर रखा, हमारे लिए पलक पावडे बिछाए और जिस दिन से हम अनुपयोगी हो गए, संसार ने हमको फेंक दिया। संघ यही बात कहता है कि हमको अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी है। उपयोगिता तब सिद्ध होगी जब मैं मेरे अहंकार का नाश करके अपने परिवार के हित की सोचूं, अपने परिवार के अहंकार को समाप्त करके समाज के हित की सोचूं, समाज के हित को छोड़कर संसार के हित को देखूं, तभी संसार हमें फिर से वह सम्मान देगा। हमारे पूर्वजों ने इस प्रकार का काम किया था, इस प्रकार का त्याग किया था इसलिए लोग उन्हें पसंद करते हैं। लेकिन हम उस इतिहास को भूल रहे हैं। इतिहास हमारा मूल है, जब व्यक्ति इतिहास को छोड़ देता है तो उसकी वही गति होती है जो किसी पेड़ की जड़ें समाप्त होने पर होती है। इतिहास हमको प्रेरणा देता है और जिसकी प्रेरणा समाप्त हो जाती है वह कौम कभी जिंदा नहीं रहती। पूज्य तन सिंह जी का अनुभव भी यही रहा कि मैं इस कौम को प्रेरणा वापस दूं। जो प्रेरणा सूख रही है, उस पेड़ को पुनः हरा भरा करूं। पूज्य तनसिंह जी भी जानते थे कि मेरी उम्र में मैं इस पेड़ को हरा भरा होते हुए नहीं देख पाऊंगा। हम भी नहीं देख पाएंगे, लेकिन हम अनुभव कर पा रहे हैं श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में उस पेड़ को पनपते हुए। यह जाति हमारी मां है यह कौम हमारी मां है और मां की सेवा की जाती है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

माननीय महावीर सिंह जी का गुजरात व महाराष्ट्र प्रवास

श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी 21 से 25 दिसंबर तक गुजरात में था 26 से 27 दिसंबर तक महाराष्ट्र में प्रवास पर रहे। 21 दिसंबर को वे राजकोट पहुंचे जहां उनके सान्निध्य में श्री हरभम जी राज राजपूत बोर्डिंग में स्नेहमिलन आयोजित हुआ। गुजरात सरकार के पूर्व मंत्री भूपेन्द्र सिंह चूड़ासमा भी उपस्थित रहे। रात्रि को प्रतिपाल सिंह सोडवदर के फार्म हाउस पर विश्राम के पश्चात 22 दिसंबर को जामकंडोरणा में स्थापना दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। यहां नए राजपूत समाज भवन के निर्माण स्थल का भी अवलोकन किया। रात्रि में गोंडल स्थित महाराजा भोजराज जी ट्रस्ट के विद्यार्थी गृह में विश्राम किया। 23 दिसंबर को गोंडल राजपूत समाज भवन में समाज के स्थानीय संस्थाओं की बैठक महावीर सिंह जी के सान्निध्य में संपन्न हुई। उसी दिन दोपहर को पडधरी तहसील के छेल्ली घोड़ी गांव में स्नेहमिलन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। रात्रि को कोटडा नायाणी गांव में स्नेहमिलन व स्नेह भोज हुआ। यहां उन्होंने नवनिर्मित लाइब्रेरी का उद्घाटन किया जिसका नाम पूज्य तनसिंह जी की स्मृति में तणेराज लाइब्रेरी रखा गया है। यहां से माननीय महावीर सिंह जी 24 दिसंबर को सुरेंद्रनगर स्थित शक्तिधाम कार्यालय पहुंचे जहां स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया। यहां से रात्रि को रेलमार्ग से यात्रा करके 25 दिसंबर को भायंदर पहुंचे जहां स्थापना दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। 26 दिसंबर को भायंदर में लगने वाली शाखा में पहुंचे, जहां शंका-समाधान कार्यक्रम में स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। यहां से पुणे पहुंचकर शाम को स्थापना दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। 26 की मध्यरात्रि को पुनः जयपुर के लिए रवाना हुए।

पुणे के सालवे गार्डन में भी 26 दिसंबर को माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में स्थापना दिवस समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महावीर सिंह जी ने कहा कि आप जिस तरह से उमड़ कर यहां एकत्रित हुए हैं, वह आपके सामाजिक भाव को दर्शाता है। लेकिन उस सामाजिक भाव को कैसे व्यवस्थित किया जाए, यह सोचना होगा। वह व्यवस्थित बनेगा अनुशासन से। हमको अनुशासित रहकर समाज को आगे बढ़ाना है। उसके लिए कोई प्रक्रिया चाहिए जिससे गुजरकर हम अनुशासित बन सकते हैं। जिससे हमारा जीवन ऐसा बने कि कोई हमारे ऊपर अंगुली ना उठा सके, हमारा जीवन ऐसा बने जिससे समाज का नुकसान नहीं हो सके, हमारे हृदय में ऐसी सद्भावना जागे कि प्राणीमात्र के लिए हम त्याग करने के लिए तैयार रहें। तभी हम खुद को क्षत्रिय कह सकेंगे। आज तो यह स्थिति है कि हम भाई-भाई आपस में लड़ रहे हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि कोई भी यहां से धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद साथ में लेकर नहीं जाता। लेकर जाएगा तो यश लेकर जाएगा,मान-सम्मान लेकर जाएगा जो उसने कमाया है। दुर्गादास जी और महाराणा प्रताप के आज भी हम गीत गाते हैं। उन्होंने कोई धन-संपत्ति अपने लिए एकत्रित नहीं की थी, उन्होंने मान सम्मान एकत्रित किया था, अपने लिए भी और समाज के लिए भी। वही काम अगर हम नहीं करते हैं तो हम क्षत्रिय कहलाने के योग्य नहीं हैं। जब तक हम अपने आप को निर्मल नहीं बनाएंगे तब तक क्षत्रिय नहीं बन पाएंगे। हम जिस काम को करने आए हैं वह यदि नहीं कर सके तो यह जीवन निरर्थक रहेगा। उस पौधे का होना क्या अर्थ रखता है जो पुष्प नहीं देता, फल नहीं देता। उन्होंने आगे बताया कि संस्कार निर्माण का अर्थ है अपने जीवन की बुरी आदतों को बाहर निकालना और अच्छी आदतों को विकसित करना। बहुत मुश्किल काम है, लेकिन यही काम है जो ईश्वर चाहता है। यदि यह काम नहीं करते हैं तो ईश्वर भी प्रसन्न नहीं होगा और अगर यह काम करेंगे तो ईश्वर प्रसन्न होगा। हीरक जयंती के समय हमने यह देखा है। ईश्वर ने ही समाज को इतनी बड़ी संख्या में वहां आने की प्रेरणा दी। वहां जो अनुशासन हमारे समाज ने दिखाया, जो गरिमा हमारे समाज ने दिखाई, हमारे समाज का जो स्वरूप वहां प्रकट हुआ, उसको और उज्जवल बनाने के लिए हम और अधिक कार्य करते रहें। 25 जनवरी के बाद और अधिक कार्यक्रम होंगे क्योंकि तब पूज्य श्री तन सिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है। उस दिन से जगह-जगह जाकर तन सिंह जी का परिचय पहुंचाना है, संघ का परिचय पहुंचाना है। संघ में आने का मार्ग कांटों से भरा हुआ है लेकिन इन कांटों की चुभन को सह कर भी जो आता है, वह जरूर संघ के मार्ग पर आगे बढ़ता है। संघ के संस्कार आने से व्यक्ति में स्वयं में परिवर्तन होता है। उसका जीवन निर्मल बनता है और ऐसे निर्मल चरित्र वाले व्यक्तियों की यदि श्रृंखला बन जाए तो उस श्रृंखला में शक्ति होती है। हम जय संघ शक्ति कह कर जो अभिवादन करते हैं, उसका यही अर्थ है कि संगठन की शक्ति की ही सदैव जय होती है। प्रत्येक युग में संगठन की आवश्यकता होती है। राम को भी संगठन करना पड़ा, कृष्ण को भी संगठन खड़ा करना पड़ा। संगठन अगर हमें बनाना है तो वह आदर्श संगठन होना चाहिए। ऐसा संगठन नहीं कि चलते-चलते उसकी कड़ियां टूट जाएं, ऐसा संगठन नहीं कि संगठन की कुछ कड़ियां इधर जाना चाहती हों तो कुछ कड़ियां उधर जाना चाहती हों। इसीलिए मूल रूप से संस्कार निर्माण करना बहुत आवश्यक है और वह संस्कार निर्माण का काम कर रहा है श्री क्षत्रिय युवक संघ। इसलिए आप सब से प्रार्थना है कि आपके अंदर सामाजिक भाव है, इसलिए आप यहां आए हैं वरना नहीं आते, उस सामाजिक भाव को थोड़ा और मजबूत कीजिए और धीरे-धीरे अपने जीवन की ओर देखिए। चिंतन कीजिए कि हमसे कोई ऐसा काम तो नहीं हो रहा जिससे हमारी जाति की ओर, कौम की ओर कोई उंगली उठाए। अपने आप को देखना और आत्मावलोकन करना प्रारंभ करें तो आपके जीवन में धीरे-धीरे निखार आता जाएगा। आप अपने बच्चों को भी श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं में भेजें, शिविरों में भेजें तो वे अच्छे इंसान बनेंगे। हो सकता है वे अफसर ना बने, हो सकता है वे बड़े व्यापारी ना बने लेकिन वे अच्छे इंसान बनेंगे, यह निश्चित है। कार्यक्रम में पुणे शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे।

माननीय संघप्रमुख श्री पहुंचे भूंगरा

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 15 दिसंबर को भूंगरा पहुंचे तथा गैस त्रासदी में सर्वाधिक प्रभावित सगत सिंह जी , उम्मेद सिंह जी व धन सिंह जी के परिवारों की बैठक में शामिल होकर शोक संतप्त परिजनों को ढाढ़स बंधाया। इसके पश्चात वे महात्मा गांधी अस्पताल पहुंचे जहां चल रहे धरने में शामिल होकर समाज द्वारा उठाई जा रही मांगों का समर्थन किया। इस दौरान संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

महाराजा अजय पाल देव चौहान स्मृति समारोह संपन्न

हरियाणा में महाराजा अजय पाल देव चौहान स्मृति समारोह का आयोजन 26 दिसंबर को अटेली के खोड में किया गया। इसमें मध्य प्रदेश गुजरात हरियाणा और राजस्थान के समाजबंधु सम्मिलित हुए। बूंदी रियासत के वंश वर्धन सिंह ने अजयपाल देव का जीवन चरित्र बताते हुए कहा कि सिर कटने के बाद भी लड़ने वाले हमारे ऐसे पूर्वजों से समाज को संघर्ष की प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके गुणों को धारण करके देश और धर्म की रक्षा करने के लिए आगे आना चाहिए। समता राम जी महाराज ने समाज को कुरीतियों से मुक्त करने के लिए कार्य करने का आह्वान किया। शेर सिंह राणा, सुनीता सिंह, श्रीपाल शक्तावत सहित अनेकों वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया। शक्ति सिंह बांदीकुई और पृथ्वीराज भांडेड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री राजपूत विद्या सभा अहमदाबाद द्वारा समूह लग्नोत्सव का आयोजन

11 दिसंबर 2022 को अहमदाबाद के गोता स्थित श्री हरेन्द्रसिंह जी सरवैया राजपूत समाज भवन में समूह लग्नोत्सव संपन्न हुआ। संस्था द्वारा आयोजित इस प्रथम समूह लग्न में 33 नवदंपति विवाह बंधन में बंधे। इस दौरान संत श्री आनंदनाथ जी, महामंडलेश्वर ऋषि बापू, गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकर सिंह वाघेला, पूर्व कैबिनेट मंत्री भूपेंद्रसिंह चूड़ासमा, साणंद ठाकुर ध्रुव सिंह वाघेला, विधायक प्रद्युमन सिंह जाडेजा, विधायक बाबू सिंह जादव, घेलुभा वाघेला, जयदीप सिंह वाघेला सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ और राजपूत विकास संघ साणंद की ओर से सभी नवदंपति को यथार्थ गीता भेंट की गई। श्री राजपूत विद्या सभा के अध्यक्ष अश्विन सिंह सरवैया और उनकी टीम ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

संपादकीय

प्राथमिकताओं के क्रम में संगठन को दें सर्वोच्चता

हम अपने आस-पास देखें तो अपने समाज के प्रति, अपने राष्ट्र के प्रति, अपनी संस्कृति के प्रति, अपने धर्म के प्रति हमारा प्रेम सदैव विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त होता ही रहता है। साथ ही इस प्रेम के कारण इनकी दुर्दशा के प्रति हमारी पीड़ा भी बार बार किसी मुद्दे या घटना का सहारा लेकर प्रकट होती रहती है। इस प्रेम और पीड़ा का दावा गिने-चुने लोगों का नहीं बल्कि बहुसंख्यक लोगों का है। लेकिन यह विचारणीय है कि यदि हम में से अधिकांश अपनी कौम, अपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति इतना लगाव रखते हैं, उसकी स्थिति के प्रति इतनी चिन्ता करते हैं, तो ये सभी दिनों-दिन अवनति की ओर क्यों जा रहे हैं? क्या कोई और इनके पतन का कारण है और हमारी इसमें कोई भूमिका नहीं है? यदि गहराई से देखेंगे तो हम पाएंगे कि समाज आदि के प्रति हमारा प्रेम और हमारी पीड़ा वास्तव में बहुत सतही और क्षणिक भावनाएं हैं। इन भावनाओं के साथ संतुलित विवेक और गहरे चिन्तन का अभाव होता है, इसलिए ये कुछ उथल-पुथल तो अवश्य मचाती हैं लेकिन किसी निश्चित दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा नहीं बन पाती। अनेकानेक अवसरों पर तो हमारी यह भावनाएं स्वार्थी या अहंकार जनित बुद्धि वाले तत्वों के हाथों हमारे शोषण का साधन भी बन जाती हैं।

ऐसे में हमारा यह चिंतन अवश्य होना चाहिए कि क्या केवल विभिन्न मुद्दों पर उद्वेलित होना और उद्देश्यहीन उथल-पुथल मचाना ही हमारा लक्ष्य है या सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन लाने का हमारा प्रयास होना चाहिए। हम अपने समाज का उदाहरण देखें। विभिन्न अवसरों पर हमारे भीतर समाज के प्रति भावनाओं का ज्वार उठता है, उस ज्वार में हम अपनी बुद्धि और अपनी क्षमता के अनुसार कुछ ना कुछ हलचल भी करते हैं। लेकिन उस ज्वार के उतरने के बाद यदि हम निरपेक्ष और आत्मस्थित होकर चिंतन करें तो पाएंगे कि वह सारी हलचल सामाजिक विकास के लिए कोई मजबूत आधार तैयार करने की बजाय पानी के बुलबुलों की भांति ही खो जाती है। समाज के प्रति हमारे प्रेम और पीड़ा में कोई कमी ना होने के बावजूद भी हम समाज के वास्तविक हित में सहयोगी बनने से वंचित ही नहीं रह जाते बल्कि कई बार तो अनजाने में समाज के वास्तविक हित में हम बाधक भी बन जाते हैं। कई बार भावुकता में हम समाज को साथ लाने के बजाय विभाजित करने वाले भी बन जाते हैं और कटुता व नकारात्मकता का प्रसार समाज हित में काम करने के नाम पर करने लगते हैं। परंतु विरोध, आलोचना और अपने अलावा सबको गलत घोषित करने की यह मानसिकता हमें यह नहीं देखने देती कि यह सब तो पहले भी होता आया है। पीछे जाकर देखेंगे तो पाएंगे कि आज से 5 वर्ष पूर्व कोई और यह सब कर रहे थे, 10 वर्ष पूर्व और 20 वर्ष पूर्व भी हमारी जगह कोई और थे और वे भी यही सब कर रहे थे। लेकिन वे आज कहां हैं और उनके किए हुए का परिणाम आज क्या है? क्या उन प्रयासों का कोई सातत्य बन पाया है जो समाज में नई प्रेरणा और उत्साह का जनक बने या केवल नकारात्मकता और कटुता ही ऐसे प्रयासों की विरासत बन कर रह जाती है।

पर इस सब का कारण क्या है? कारण है प्राथमिकताओं के क्रम में उल्टा चलना। जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण और प्राथमिक आवश्यकता है उसको छोड़ कर कम महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने में अपनी ऊर्जा और समय लगाना ही वह भूल है जिसके कारण अपने समाज के प्रति हमारा प्रेम और हमारी पीड़ा व्यर्थ की हलचल बनकर रह जाती है। हम यदि तथ्यपरक और दूरदृष्टि पूर्ण चिंतन करें या हमारे महापुरुषों के संदेश को समझें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे समाज के लिए आज सबसे बड़ी प्राथमिकता संगठित होने की है। संगठित हुए बिना किसी भी क्षेत्र में हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे, यह बात वर्तमान स्थितियों में समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं है। लेकिन हममें से कितने लोगों की सर्वोच्च प्राथमिकता आज समाज को संगठित करने की है? कभी हमारी प्राथमिकता कुछ मुद्दे बन जाते हैं, कभी किसी सुखद या दुखद घटना पर हमारी प्रतिक्रियाएं हमारी प्राथमिकता बन जाती है तो कभी राजनीति (जिसमें हममें से प्रत्येक अपने आपको विशेषज्ञ ही मानता है) हमारे लिए प्राथमिकता दिखाई देती है और इन्हीं प्राथमिकताओं के अनुरूप हम समाज हित की बातें करते हैं, कुछ लिखते हैं या कुछ हलचल भी करते हैं। ऐसा नहीं कि यह सब नहीं किया जाना चाहिए, अवश्य किया जाना चाहिए लेकिन प्राथमिकताओं के सही क्रम को बनाए रखकर। क्या उपरोक्त सभी प्रयासों में भी सफलता के लिए संगठन पहली आवश्यकता नहीं है? निश्चित रूप से हम सभी मानेंगे कि समाज का संगठित होना प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए प्राथमिक आवश्यकता है और वह संगठन कैसा हो? वैसे तो इस बात पर बहुत विमर्श किया जा सकता है लेकिन उसका अंतिम निष्कर्ष यही निकलेगा कि एक ध्येय, एक मार्ग, एक ध्वज और एक नेता के सिद्धांत के बिना कभी भी सच्चा संगठन होना संभव नहीं है। ऐसा संगठन ही शक्ति का निर्माण कर सकता है और उस शक्ति से ही वे कार्य संभव हो सकते हैं जो सामान्यतया व्यक्ति की सामर्थ्य के बाहर दिखाई देते हैं।

हम अपने आपको इस कसौटी पर कसें कि समाज के प्रति प्रेम की अपनी भावनाओं को परिष्कृत करके हम समाज में इस प्रकार के संगठन को निर्मित करने के लिए कर्मशील हुए हैं अथवा नहीं। क्या हम समाज के हित में कार्य करने के बड़े-बड़े दावे करने से पूर्व समाज की इस प्राथमिक आवश्यकता को पूर्ण करने में सहयोगी बने हैं? यदि नहीं तो उसका कारण ढूंढें और ईमानदारी से ढूंढेंगे, सूक्ष्मता से अपने भीतर देखेंगे तो पाएंगे कि हमारा अहंकार ही हमें रोक रहा है। क्योंकि यदि हम समाज में ऐसे संगठन को निर्मित करने में सहयोगी बनना चाहेंगे तो सबसे पहले हमें स्वयं उस संगठन में कड़ी बन कर जुड़ना होगा। यह बड़ी कठिन बात है क्योंकि तब हमारा अहंकार श्रेय नहीं ले पाएगा, हमारी बुद्धि का दंभ तुष्ट नहीं होगा। केवल गहन आत्मचिंतन से ही अहंकार और बुद्धि के इस दुष्ट गठबंधन से मुक्ति मिल सकती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन सब बातों को भली प्रकार समझता है और इसीलिए अपनी समस्त ऊर्जा समाज में संगठन की सर्वोच्च आवश्यकता को पूरी करने में विगत 76 वर्ष से लगा रहा है। परिणाम बहुत उत्साहवर्धक व आशातीत होते हुए भी समाज की आवश्यकता की तुलना में अपर्याप्त है। इसीलिए वह निरंतर अपने कर्म में लगा हुआ है और अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक समाजबंधु में इस प्रकार का आत्मचिंतन जागृत करने का प्रयास करता है जिससे वह भी सामाजिक संगठन की श्रृंखला की एक कड़ी बनने को प्रेरित हो।

शालिनी शेखावत मोजास की यूपीएससी परीक्षा में आठवीं रैंक

शालिनी शेखावत मोजास ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय सांख्यिकी सेवा परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर आठवां स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने यह उपलब्धि प्राप्त करके अपने परिजनों और समाज को गौरवान्वित किया है।

अनुषा शक्तावत राज्य सरकार द्वारा स्पॉन्सरशिप के लिए चयनित

पिपलाज गांव की निवासी अनुषा शक्तावत को राज्य सरकार द्वारा राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस के तहत स्पॉन्सरशिप के लिए चयनित किया गया है। राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अनुषा से व्यक्तिगत मुलाकात कर बधाई दी एवं राज्य सरकार के जनसंपर्क विभाग ने उनका एक वीडियो भी जारी किया है। अनुषा अमेरिका की प्रतिष्ठित शिकागो यूनिवर्सिटी में मास्टर्स इन पब्लिक पॉलिसी की पढ़ाई कर रही है। अनुषा के पिता डॉ. अजीत सिंह जयपुर के आर यू एच एस हॉस्पिटल में अधीक्षक और एस एम एस अस्पताल में अतिरिक्त अधीक्षक हैं।

शंकर सिंह डेरिया का ऑल इंडिया जूडो टीम में चयन

जोधपुर जिले के शेरगढ़ क्षेत्र के डेरिया गांव निवासी शंकर सिंह का ऑल इंडिया जूडो टीम में चयन हुआ है। वे 2 से 6 जनवरी तक लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय जालंधर पंजाब में होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेंगे। शंकर सिंह डेरिया श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

चंद्रवीर सिंह बरवाली का नेशनल शूटिंग अंडर-19 में चयन

चंद्रवीर सिंह बरवाली ने सीबीएसई वेस्ट जोन राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में 400 में से 374 अंकों के स्कोर के साथ चौथा स्थान हासिल कर नेशनल शूटिंग अंडर-19 में जगह बनाई। चंद्रवीर सिंह बरवाली के पिताजी गजेंद्र सिंह बरवाली एवं दादाजी चैन सिंह बरवाली श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.01.2023 से 15.01.2023 तक	**अमृतधाम आश्रम**। हैदराबाद **सम्पर्क सूत्र:** गोपालसिंह चारणीय 99498-99208 गोपालसिंह भिंयाड़ 93933-98120

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा ग्यारहवीं कक्षा से स्नातक तक के विद्यार्थियों एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले समाज के छात्र-छात्राओं के लिए कैरियर गाइडेंस कार्यशाला का आयोजन 18 दिसंबर को सीकर में किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के प्रशासनिक अधिकारियों सहित शिक्षा, चिकित्सा, खेल, कॉरपोरेट व आई टी क्षेत्र के विशेषज्ञों ने युवाओं का मार्गदर्शन किया। प्रतिभागियों को अपना लक्ष्य कैसे तय करें, विषय चयन किस प्रकार करें, वर्तमान समय के आधुनिक संसाधनों और तकनीकों का अधिकतम उपयोग इस प्रतिस्पर्धा के युग में किस तरह किया जाए, आदि के बारे में विस्तार से समझाया गया एवं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के के प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। रतन सिंह छिछास ने कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए उपस्थित विशेषज्ञों का परिचय दिया। सुरेन्द्र सिंह तंवरा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ और श्री प्रताप युवा शक्ति के उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ईश्वर सिंह सांवराद ने किया। कार्यक्रम के अंत में भूंगरा में हुई गैस त्रासदी में दिवंगत हुए समाज के सदस्यों को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की व उपचाराधीन पीड़ितों के शीघ्र स्वस्थ होने की परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद का सम्मान समारोह संपन्न

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद का 14वां तेजस्वी विद्यार्थी सम्मान समारोह एवं स्नेहमिलन समारोह 18 दिसंबर को आयोजित हुआ जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राजपूत समाज के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। बलदेव सिंह भैंसाणा (डी.सी.पी. अहमदाबाद ट्रैफिक पुलिस) ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समय के साथ चलना सीखें। आने वाले समय में हम क्या करना चाहते हैं, उसे हम भली प्रकार समझ लें। सरकारी नौकरियों के अवसर भी सीमित होते हैं इसलिये हम व्यापार में भी अपनी भागीदारी निभाएं। उन्होंने कहा कि मेरी सफलता का श्रेय मैं श्री क्षत्रिय युवक संघ को देता हूं। गुजरात साहित्य अकादमी के महामात्रा जयेन्द्र सिंह जादव ने कहा कि आज तक हम मुगलों, अंग्रेजो का इतिहास पढ़ते आये हैं लेकिन आने वाली नयी शिक्षा पद्धति में गीता एवं क्षत्रिय का उज्जवल इतिहास पढ़ाया जायेगा। नारी रत्न से सम्मानित चेतना बा जाडेजा ने समाज के विकास में नारी शक्ति के योगदान के बारे में बताया। उन्होंने समाज की महिलाओं को अपनी संस्कृति को न भूलने और सहनशीलता के साथ परिवार को जोड़े रखने की बात कही। साणंद ठाकुर ध्रुवसिंह वाघेला ने युवाओं को उनकी सफलता के लिए बधाई दी। संस्था के निवर्तमान अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह रेंथल ने नवनियुक्त अध्यक्ष अनिल सिंह गोधावी को पगड़ी पहना कर उत्तरदायित्व सौंपा। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मध्य गुजरात संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बूंदी में श्री क्षत्रिय संस्कार समिति की आमसभा संपन्न

श्री क्षत्रिय (राजपूत) संस्कार बचत एवं साख सहकारी समिति की 9 की आमसभा 25 दिसंबर को बूंदी के बहादुर सिंह सर्किल स्थित रिसोर्ट में संपन्न हुई। जिला प्रमुख चंद्रावती कंवर ने कहा कि राजपूत युवाओं को सर्व समाज को साथ लेकर भ्रष्टाचार एवं अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी होगी जिससे समाज में सद्भावना व एकता बनी रहे। महीपत सिंह हाड़ा ने हाड़ोती क्षेत्र में राजपूत समाज को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए कार्य करने की बात कही। हिंडोली के डीएसपी सज्जन सिंह राठौड़ ने युवाओं से सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने की बात कही। समिति के अध्यक्ष बलवीर सिंह राजावत ने संस्था की गतिविधियों एवं आगामी कार्य योजना के बारे में जानकारी दी।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

संघ में है परम तत्व का सम्मिश्रण: सरवड़ी

(पेज एक से लगातार)

जो गीता का ज्ञान है, उसमें जो वर्ण के बारे में बताया गया है, उसमें से किसी भी वर्ण का अगर हमने वैसा का वैसा पालन करना प्रारंभ कर दिया तो हम स्वतः ही ईश्वर की ओर जा रहे हैं। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में जो शिक्षण दिया जाता है, वह ईश्वर की ओर बढ़ने की बात है। हम इस संसार में रहते हैं, इस संसार की माया और मोह से प्रभावित होते हैं। संसार छोड़कर और जंगल में जाकर तपस्या करने की बात संघ नहीं करता। वह तो कहता है कि इस संसार में रहो, संसार के सभी दायित्वों का पालन करो लेकिन उनमें लिप्त मत रहो, उनके साथ जुड़ाव मत करो। जुड़ाव करने के लिए हमारे पास दूसरा लक्ष्य है, उसकी ओर बढ़ो। अपनी सीमाओं को विस्तार दो। अपनी सीमाओं को विस्तार देने का सीधा साधा अर्थ है कि व्यक्तिगत स्वार्थ से बड़ा है पारिवारिक स्वार्थ, पारिवारिक स्वार्थ से बड़ा है सामाजिक स्वार्थ, सामाजिक स्वार्थ से बड़ा है मानव मात्र का स्वार्थ। यह धीरे-धीरे हमारी सीमाओं को विस्तार देने का काम है और इस तरह से व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि तक पहुंचने की बात है। इसी का साधारण व्यावहारिक ज्ञान हमको संघ में मिलता है और इस प्रकार से हम बढ़ते जाएं तो निश्चित रूप से हम उस ईश्वर की पूजा कर रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम करते हैं और पूरी लगन और तत्परता से अपने जीवन का सुधार करते हैं तो हम ईश्वर की भक्ति ही कर रहे हैं। इससे अलग कोई दूसरी भक्ति नहीं है। हम अपनी इन लिप्तताओं को अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए भी धीरे-धीरे कमजोर करते हैं, क्षीण करते हैं तो हम परमात्मा की ओर बढ़ रहे हैं। परमात्मा की यही इच्छा है और यही कारण है कि इतना मुश्किल काम है फिर भी संघ कर रहा है। इतना मुश्किल होने के बावजूद भी यह काम रुका नहीं है। संघ क्यों बराबर बढ़ रहा है क्योंकि इसमें उस परमतत्व का सम्मिश्रण हो गया है। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने गुजरात के राजकोट जिले में जाम कंडोरणा में 22 दिसंबर को आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने आगे कहा कि प्रारंभ होता है अपने आप से। स्वयं को संस्कारित नहीं बनाया तो संसार को संस्कारित नहीं कर सकते। संघ में खेलों के माध्यम से, चर्चा के माध्यम से, बौद्धिकों के माध्यम से हमारे जो अवगुण हैं, हमारी जो विकृतियां हैं, उनको साफ करने का कार्य किया जाता है। सोना यदि कीचड़ में पड़ा हो तो कोई उसकी कीमत नहीं आंकता। अगर उस कीचड़ को साफ कर दो तो ही सोने की कीमत लोग पहचानते हैं। हमारे ऊपर भी विकृतियों की जो कीचड़ है उसको धीरे-धीरे हम साफ करते जाएं तो अंदर से वही सोना निकलेगा। हमारे अंदर, हमारे डीएनए में वह मौजूद है, उसको बाहर निकालने का प्रयास, जो हमारे ऊपर आवरण आ गया है उस आवरण को दूर करने का प्रयास श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। बहुत लोगों को यह गलतफहमी है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात करते हैं तो केवल राजपूतों को हम बुलाते हैं। ऐसा नहीं है। संघ की शाखा में कोई भी आ सकता है। हमने 75 वर्ष तक चलते-चलते अपने आपको ऐसा बनाया है कि हम सबके लिए हैं, हम सबसे समान व्यवहार करते हैं। इसीलिए हमने अनुसूचित जाति के चिंतकों को साथ में बुलाया, बिठाकर बात की। इसके अलावा हमने कायमखानी मुसलमानों के साथ संवाद प्रारंभ किया। बीच में कोविड आ गया जिससे हम साथ बैठ नहीं सके। अब प्रत्येक जिले में किसान सम्मेलन किया जा रहा है। उसमें कृषि की बात तो होती ही है, भूमि को सुधारने की बात भी होती है, किसानों की समस्याओं को दूर करने की बात भी होती है, लेकिन मुख्य बात यह है कि हमारे परस्पर जो दूरियां हैं उनको कम करने की तरफ अग्रसर होते हैं। उसका भी बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। हमारे समाज के राजपत्रित अधिकारियों का भी एक सम्मेलन किया गया। उस कार्यक्रम को देखकर भी लोगों में सद्भाव जागृत हुआ। धीरे-धीरे सब को एक साथ लाना है। धीरे-धीरे समाज में यह बात फैलाने का प्रयास करते हैं कि यह केवल राजपूत जाति का ही नहीं बल्कि हम सब का कर्तव्य है, इसलिए हमारा साथ दीजिए। हम सब मिलकर मानवता की सेवा करेंगे, भारत का नाम फिर उज्जवल होगा, विश्वगुरु के नाम से भारत फिर जाना जाने लगेगा। पर यदि हम परस्पर एक दूसरे की टांग खिंचाई करते रहेंगे तो इस देश का सत्यानाश करने में हमने कोई कसर नहीं रखी है, आगे भी वही करते रहेंगे। धीरे-धीरे जो संस्कार निर्माण हो रहा है अब उसका असर सामाजिक रूप से भी पडना चाहिए। वह समष्टि की ओर बढ़ने की बात है। हमारे में जो लघुता की प्रवृत्ति है उसकी सीमा को भी तोड़ कर हम ईश्वर की ओर बढ़ रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम है निष्काम कर्म योग का। हमारा कर्तव्य है वह हम करेंगे, उसका परिणाम कुछ आए या नहीं आए, कोई बात नहीं। परिणाम जैसा आएगा, वैसा आएगा लेकिन यदि हम कर्तव्य समझकर करते हैं तो जो हम करते हैं वह कर्मयोग बन जाता है जो ईश्वर की ओर बढ़ने का मार्ग है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गुजरात सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह चूड़ासमा ने कहा कि संघ से जुड़ना मेरा सौभाग्य है। उन्होंने बताया कि पूज्य तनसिंह जी के सान्निध्य में किए गए शिविर का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने वहीं से समयबद्धता का पाठ सीखा। उन्होंने चूड़ासमा राजपूत समाज के बंधारण के 100 वर्ष पूरे होने पर जनवरी में धंधुका में आयोजित होने वाले समारोह में सभी को आने का निमंत्रण दिया। पाटीदार समाज के जयेश भाई रादडिया (गुजरात सरकार के पूर्व मंत्री व वर्तमान विधायक) ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया और सामाजिक सद्भावना के लिए मिल कर कार्य करने की बात कही। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदास का बास ने श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा समाज की मातृशक्ति को संस्कारित करने के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी और नारी के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए किस प्रकार समाज, राष्ट्र, संस्कृति और धर्म की रक्षा में सहयोग किया जा सकता है, उसके संबंध में बताया। शक्ति सिंह कोटडा नायाणी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में भूंगरा त्रासदी के दिवंगतों को श्रद्धांजलि दी गई।

महाराष्ट्र संभाग में भी भायंदर (मुंबई) में 25 दिसंबर को माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सान्निध्य में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते महावीर सिंह जी ने कहा कि हमको क्षत्रिय के घर में जीवन क्यों मिला? उसका अर्थ क्या होता है, उसका दायित्व क्या होता है? क्या वह हम कर पा रहे हैं? अगर वह दायित्व हम नहीं निभा पा रहे हैं तो इस जीवन की कोई सार्थकता नहीं है। व्यर्थ जाएगा यह जीवन। क्षत्रिय वह है जो क्षय से त्राण करें। वह दायित्व यदि हम नहीं निभाते हैं तो क्षत्रिय कहलाने के लायक हम नहीं हैं। हम राजपूत के घर में जन्मे हैं। राजपूत के डीएनए में क्षत्रियत्व के सब तत्व मौजूद हैं लेकिन उन तत्वों पर आवरण आ गया है। उनके ऊपर ऐसी परतें जम गई हैं जिनके कारण क्षत्रियत्व प्रकट नहीं हो पाता। यह कंटकों से भरा मार्ग है और इस मार्ग पर चलना बहुत मुश्किल है। उस मुश्किल काम को हमको करने का प्रयास करना है और वह अपने आप से शुरू होता है। उपदेश से शुरू नहीं होता, दूसरों को देखने से शुरू नहीं होता, बल्कि खुद के अंदर वह बात जागृत होनी चाहिए। यह साधना का मार्ग है और साधना के मार्ग में संकट आते हैं, साधना के मार्ग में विरोध होता है। सबसे पहले हमारे अंदर विरोध पैदा होता है। अपने परिवार, व्यवसाय, नौकरी आदि से समय निकालकर क्यों हम संघ का काम करें, क्यों हम यहां इतने कष्ट सहन करें, क्यों हम किसी का अनुसरण करें, ये बातें पैदा होती हैं।

लेकिन अगर धीरज से इन सब विरोधी विचारों को नियंत्रित करके हम एक साथ संगठित होकर चलने लगते हैं तब बाहर से भी विरोध होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रारंभ से ही यह विरोध होना प्रारंभ हुआ और आगे भी नहीं होगा ऐसी कल्पना मत कीजिए, क्योंकि जो कोई काम करता है उसकी तरफ उंगली उठाने वाले भी पैदा हो जाते हैं। खुद चाहे कुछ नहीं करें, लेकिन उंगली उठाने के लिए तैयार रहते हैं। इसलिए विरोध की कोई दिक्कत ही नहीं है। होने दें विरोध। जो विरोधी हैं, वे अपना काम कर रहे हैं, उनका काम ही वही है। हमको तो उनसे शिक्षा लेनी चाहिए कि उस विरोध में यदि रत्ती भर भी सच्चाई है तो हम अपने आप को देखें, अपना आत्मावलोकन करें, उस कमी को दूर करें और अगर सच्चाई नहीं है तो हम अपने काम में मस्त रहें, कोई फर्क नहीं पड़ने वाला विरोध करने वाले करते रहेंगे, हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। विरोधी भी अपने बन सकते हैं लेकिन तब, जब हम लगातार अपना काम करते रहेंगे। परमात्मा हमारा सहायक है, इसलिए सभी मुश्किल हल हो जाती है। इसलिए बाहर के विरोध की परवाह नहीं करें, अपने अंदर के विरोध को देखें। अपना अंतरावलोकन करो कि हमसे कोई गलत काम तो नहीं हो रहा। अपने आपको बनाओगे तो समाज बनेगा। समाज को बनाने के लिए ही श्री क्षत्रिय युवक संघ कार्य कर रहा है लेकिन जीवन बनाना, संस्कार निर्माण करना, चरित्र बनाना सबसे मुश्किल काम है। फिर यह काम करने में पार्टिसिपेट कौन कर रहे हैं? सामान्य परिवार से आने वाले लोग ही संघ का कार्य करते हैं जिनको अपने सांसारिक दायित्व भी निभाने पड़ते हैं। इसलिए संघ अपनी गति से चल रहा है लेकिन चल वैसे रहा है जैसे चलना चाहिए। जो कार्य होना चाहिए, वही हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ दो का शेष)

संगठन से...

पूज्य तन सिंह जी ने यही संकल्प लिया कि यह जो मेरी कौम है, इसे मां के रूप में मान कर हमेशा इसकी सेवा करूंगा। संघप्रमुख श्री ने समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति चेताते हुए कहा कि आज हम जगह-जगह देखते हैं कि संस्थाओं-संस्थाओं के बीच में झगड़े चलते हैं, समाज और संगठन के बीच में झगड़े चलते हैं, समाज और राजनीतिक व्यक्ति के बीच में झगड़े चलते हैं, श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे झगड़ों को भी मिटाने का प्रयास करता है। हमको याद दिलाता है कि हम तो वे लोग हैं जो लोगों को रास्ता दिखाया करते थे, और आज हम दूसरों का अनुसरण कर रहे हैं। यह पतन की जो होड़ मची हुई है, संघ उसको रोकने का प्रयास करता है और हमें श्रेष्ठ मार्ग की ओर ले जाना चाहता है। लेकिन चढ़ाई का मार्ग, साधना का मार्ग बड़ा कठिन मार्ग है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग वास्तव में साधना है। संघ व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से परमेष्टि की ओर ले जाने वाला मार्ग है। पतन के मार्ग पर किसी को ले जाना हो तो उसके लिए कोई शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। गुटखा खाने और सिगरेट पीने की कोई क्लास नहीं लगती हैं लेकिन फिर भी क्या लोग सीखते नहीं हैं। लेकिन जो साधना का मार्ग होता है, जो शिक्षण का मार्ग होता है, जो चरित्र का मार्ग होता है, उसको सिखाने की आवश्यकता होती है, क्योंकि वह ऊपर का मार्ग है। ऊपर अगर पानी को चढ़ाना है तो मोटर लगानी पड़ती है, बल लगाना पड़ता है हम उस पतन के मार्ग पर जा रहे हैं। संघ उस पतन को रोककर हमको उस मार्ग पर ले जाना चाहता है जो समाज से परमेश्वर की तरफ जाता है। संघ की साधना समाज सापेक्ष साधना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कोई भी काम करने के लिए कोई वेतनभोगी व्यक्ति नहीं है। सारा का सारा काम स्वयंसेवक लोग अपनी इच्छा से करते हैं। 76 वर्षों से इस प्रकार से कार्य कर रहे हैं जिस प्रकार से अपना स्वयं का काम करते हैं और स्वयं का काम कोई भी बिगड़ने नहीं देता है। हमने अभी तक इस समाज को अपना नहीं माना है, हमने केवल अपने परिवार को अपना माना है। हमारा पढ़ना, हमारा जीना, हमारा परिवार पालन सब समाज के सापेक्ष हो जाए, हम जो कुछ भी करते हैं वह समाज के लिए हो जाए और जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति ऐसा सोचने लग जाएगा उस दिन संघ बन जाएगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी संगठन की बात करता है। क्षत्रिय शब्द को देखकर अनेक राजनीतिक लोग भी और अन्य दूसरी जातियों के लोग भी यह कहते हैं कि ये जातिवाद फैलाते हैं। लेकिन हम तो कहते हैं कि क्षत्रिय का कर्तव्य सज्जनों की रक्षा करना है चाहे वह किसी भी वर्ग से हो और दुष्ट का विनाश करना है चाहे वह किसी भी वर्ग से हो।

हमने पशुओं के लिए, मंदिरों के लिए, नमक के मोल के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया तो फिर हम जातिवादी कैसे हैं? श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि क्षत्रिय कभी जातिवादी हो ही नहीं सकता। इसलिए संघ केवल क्षत्रियों को लेकर चलने की बात नहीं करता। हां, शुरू स्वयं से करना पड़ेगा क्योंकि जब क्षत्रिय स्वयं श्रेष्ठ कर्म करेगा तभी उससे श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दूसरे लोग ले पाएंगे। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ पहले क्षत्रियों से शुरूआत करता है और फिर दूसरे लोगों को भी जोड़ने का प्रयास करता है। राजस्थान में इस प्रकार का काम शुरू हो गया है। चाहे वह एससी के लोग हों, एसटी के लोग हों, चाहे ओबीसी के लोग हों, चाहे दूसरे धर्म के लोग हों, उन सभी को साथ में बिठा कर किस प्रकार से समाज में सामंजस्य बिठाया जा सकता है, किस प्रकार राष्ट्र की एकता को बनाए रखा जा सकता है, उस प्रकार की बात करना हमने प्रारंभ कर दिया है। आने वाले दिनों में, चाहे हम नहीं देख पाएं, हमारी पीढ़ियां देखेंगी कि श्री क्षत्रिय युवक संघ इस प्रकार से पूरे राष्ट्र को ही नहीं, पूरी मानवता को साथ लेकर चलने का प्रयास करेगा। कार्यक्रम में एमएलसी जितेन्द्र सिंह सेंगर ने भारतीय संस्कृति में क्षत्रियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। संतोष कंवर सिसरवादा ने बालिका संस्कार निर्माण में श्री क्षत्रिय युवक संघ की भूमिका के बारे में बताते हुए इस क्षेत्र में हो रही सांघिक गतिविधियों की जानकारी दी। अरविंद सिंह ने बुंदेलखंड क्षेत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा लगाए गए शिविरों द्वारा संस्कार निर्माण और संगठन के प्रति आ रही जागरूकता के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन जयपुर सम्भाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने किया। प्रान्त प्रमुख जितेंद्र सिंह सिसरवादा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बांदा, मकरबई, मटोन्ध, पहरेटा, धन्वारी, बर्दा, रिवाई, रेपुरा खुर्द, उंटिया, गहरा, कबरई, खरेला, अतरार माफ, पिपरामाफ, जोरैया, एचाना, बराय व महोबा से समाजबन्धु कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ छह का शेष)

संघ में...

इसी का यह परिणाम आया है कि आज समाज में एक विश्वास बना है कि हमारे समाज में कोई अच्छा कार्य करने वाली संस्था है तो वह श्री क्षत्रिय युवक संघ है और इसलिए उसको समर्थन देना चाहिए। यही समर्थन पिछले वर्ष हीरक जयंती के अवसर पर भी प्राप्त हुआ जिसने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75 साल की तपस्या का वह छोटा सा रूप सबने देखा और पूरा समाज उसके साथ जुड़ा। हम निष्काम भाव से लगातार काम करते रहें, आगे बढ़ते रहें तो समाज निश्चित रूप से बहुत ही मजबूत बनेगा, बलवान बनेगा और यह क्षत्रिय समाज ही है जो इस भारत को पुनः विश्व गुरु बना सकता है। उसके अलावा किसी में हिम्मत नहीं है। इसलिए यह हमारे ऊपर दायित्व आया हुआ है, हमारे जन्म को सार्थक बनाने का जो माध्यम है वह यही है और इसके लिए हमको चिंतन करना चाहिए और उसी के अनुसार कर्म करना चाहिए। यह सबसे जरूरी काम है। कार्यक्रम के प्रारंभ में देवीसिंह झलोड़ा ने नववर्ष संदेश पढ़कर सुनाया। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची ने पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं उसके आनुषंगिक संगठनों के द्वारा किए जा रहे कार्यों पर संभागप्रमुख नीरसिंह सिंघाना ने प्रकाश डाला। कार्यक्रम में हजारों समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह आलासन सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 25 दिसंबर को ही हैदराबाद में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजस्थानी राजपूत संघ हैदराबाद सिकंदराबाद तेलंगाना प्रदेश के तत्वाधान में सन्जिवाह पार्क सिकंदराबाद में आयोजित कार्यक्रम में भूंगरा गैस त्रासदी की घटना में दिवंगत हुए बंधुओं को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राजस्थानी राजपूत संघ के पूर्व अध्यक्ष राम सिंह चारणीम, वर्तमान अध्यक्ष रतन सिंह एवं राजू सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सभी को एकजुट रहने एवं अपनी संस्कृति और परम्पराओं को सहेजने की बात कही। कार्यक्रम में सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे।

तनाश्रम (जैसलमेर) में बैठक संपन्न

जैसलमेर शहर में स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय तनाश्रम में 18 दिसंबर को स्वयंसेवकों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में आगामी 25 जनवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तन सिंह जी के जन्म स्थान बेरसियाला गांव में उनकी जयंती भव्य समारोह के रूप में मनाने को लेकर चर्चा की गई। संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने बताया कि कार्यक्रम में लगभग 30000 संख्या का लक्ष्य लिया गया और उसी के अनुरूप सभी प्रांतप्रमुखों को जिम्मेदारी सौंपी गई। 25 दिसम्बर से आसकंद्रा में शुरू होने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर को लेकर भी चर्चा हुई। बैठक के अंत में भूंगरा में गैस त्रासदी के दिवंगतों और स्व. धोंकल सिंह को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई। भूंगरा गैस त्रासदी के पीड़ित परिवारों के लिए स्वयंसेवकों द्वारा आर्थिक सहयोग एकत्रित कर जोधपुर भेजा गया। बैठक में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह तेजमालता, सांवल सिह मोढा, बाबू सिंह बेरसियाला, गणपत सिंह अवाय, गोपाल सिह रणधा, पदम सिंह रामगढ़, नरेंद्र सिंह, भोजराज सिह तेजमालता, अमरसिंह रामदेवरा, गिरधर सिंह सरपंच प्रतिनिधि तेजमालता सहित अनेकों स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

रूढ़ियों को समाप्त करने की ओर बढ़ रहा समाज

समाज में विभिन्न प्रकार की रूढ़ियों जैसे टीका, दहेज की मांग, मृत्युभोज, शराब के प्रयोग आदि को रोकने के प्रति जागृति निरंतर बढ़ रही है जिसके परिणाम स्वरूप समाजबंधु अपने परिवार में होने वाले आयोजनों को इन रूढ़ियों से मुक्त रखने के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इसी कड़ी में सीकर के जालुण्ड गांव के जगदीश सिंह शेखावत ने अपने पुत्र नीरज सिंह (भारतीय सेना में सेवारत) के विवाह में वधुपक्ष से शगुन के रूप में केवल एक रुपया और नारियल ही स्वीकार किया और पूरी सादगी से विवाह किया। इसी प्रकार गुजरात में श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेन्द्र सिंह आंबली ने अपने पिताजी के देहावसान के पश्चात उनकी अंत्येष्टि संस्कार में मृत्युभोज, पिंडदान आदि किसी भी प्रकार कि रूढ़ि का पालन न करके वैदिक यज्ञ करके छह दिन में शोक भंग किया। उन्होंने अपने पिताजी की स्मृति में श्री चूड़ासमा राजपूत समाज और ओघुभा मनुभा विधवा सहायता कोष में आर्थिक सहयोग किया।

विजय सिंह काणेटी (प्रथम) को पितृशोक

श्री रणुभा चंदुभा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक विजय सिंह काणेटी (प्रथम) के पिता **श्री रणुभा चंदुभा काणेटी** का निधन 25 दिसंबर को 85 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

अनिरुद्ध सिंह काणेटी (द्वितीय) को पितृशोक

श्री धीरूभा चनुभा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक अनिरुद्ध सिंह काणेटी (द्वितीय) के पिता **श्री धीरूभा चनुभा** काणेटी का देहावसान 4 दिसंबर को 77 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है एवं परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सहदेव सिंह मूली को मातृ शोक

श्रीमती प्रेम बा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक सहदेव सिंह मूली की माता **श्रीमती प्रेम बा** धर्मपत्नी श्री रणजीत सिंह मूली का देहावसान 12 दिसंबर को 81 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

धर्मेन्द्र सिंह आंबली को पितृशोक

श्री महोब्बत सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेन्द्र सिंह आंबली के पिता **श्री महोब्बत सिंह जटुभा** आंबली का देहावसान 14 दिसंबर को 84 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

लक्ष्मण सिंह तीतरी का देहावसान

श्री लक्ष्मण सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **श्री लक्ष्मण सिंह तीतरी** का देहावसान 17 दिसंबर 2022 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

संरक्षक श्री का दिल्ली प्रवास

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर का 22 से 25 दिसंबर तक राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रवास रहा। आप 22 की सुबह बाड़मेर से दिल्ली पधारे एवं शाम 5 बजे पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं जयपुर ग्रामीण सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौड़ के आवास पर आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में भाग लिया। इसी दिन शाम उत्तरप्रदेश के डुमरियागंज से सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री जगदम्बिका जी पाल द्वारा संरक्षक श्री के सम्मान में दिए गये स्नेहभोज में शामिल हुए। इस स्नेह भोज में श्री जनार्दन सिंह सिगरीवाल, सांसद महाराजगंज (बिहार), श्री कीर्तिवर्धन सिंह जी, सांसद गोंडा (उत्तरप्रदेश), श्री विजयपाल सिंह तोमर, सांसद (उत्तरप्रदेश) एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बीजेपी किसान मोर्चा, श्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद जयपुर ग्रामीण, श्री पुष्पेंद्र सिंह चंदेल, सांसद, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश), श्री सुनील सिंह, सांसद, छतरा (झारखंड), श्रीमती दिया कुमारी, सांसद राजसमंद, श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय जलशक्ति मंत्री एवं सांसद जोधपुर, श्री देवेन्द्र सिंह भोले, सांसद, अकबरपुर (उत्तरप्रदेश), एवं श्री रघुराम कृष्ण राजू, सांसद, नरसापुरम (आंध्रप्रदेश) आदि सहित इनके परिवारजन वह सहयोगी उपस्थित रहे। श्री गजेन्द्र सिंह महरोली ने सबको श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी दी एवं सभी ने संघ के काम को सराहते हुए अपने अपने क्षेत्र में संघ कार्य की आवश्यकता जताई। भविष्य में भी इस प्रकार के मिलन आयोजित करने की आवश्यकता जताई। 24 दिसंबर को प्रातः माननीय संरक्षक श्री की रक्षामंत्री माननीय राजनाथ सिंह जी से भेंट हुई। उनके राजस्थान की राजनीति को लेकर चर्चा हुई और माननीय संघप्रमुख श्री ने उन्हें बाड़मेर आलोक आश्रम पधारने का निमंत्रण दिया। 24 को ही उपराष्ट्रपति माननीय जगदीप जी धनकड़ ने संरक्षक श्री को अपराह्न भोजन पर आमंत्रित किया और वहां उनसे आत्मीयता पूर्ण चर्चा हुई। अपराह्न 4 बजे भारत के कृषि मंत्री माननीय नरेंद्र सिंह तोमर संरक्षक श्री से भेंट करने पहुंचे और उनसे संघ की गतिविधियों व सामाजिक विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी भेंट में माननीय संरक्षक श्री द्वारा सभी को संघसाहित्य की पुस्तकें भेंट की गई। 25 दिसंबर को प्रातः रवाना होकर माननीय संरक्षक श्री जयपुर पहुंचे।

स्थापना दिवस पर भूंगरा त्रासदी के दिवंगतों को दी श्रद्धांजलि

श्री क्षत्रिय युवक संघ का 77वां स्थापना दिवस 22 दिसंबर को देशभर में मनाया गया। माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशानुसार राजस्थान में होने वाले सभी कार्यक्रम भूंगरा त्रासदी के दिवंगतों के प्रति श्रद्धांजलि सभा के रूप में मनाए गए जिनमें उपस्थित स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी स्थानों पर माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा प्रदत्त नववर्ष संदेश का पठन भी किया गया। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में कार्यक्रम आयोजित हुआ। नागौर संभाग में वीरवर दुर्गादास सभाभवन डीडवाना, रताऊ, कोयल, ढींगसरी, न्यामा (सुजानगढ़), सागु बड़ी, छापड़ा, आंवलियासर, जालनियासर, चाउ, जोधियासी, गुगरियाली, ऊंचाइडा, धानजी, आचीणा, पांचलासिद्धा, दक्षिण भोम, भाटीयो की ढाणी, मेड़ता रोड, श्री चारभुजा छात्रावास मेड़ता सिटी, दधवाडा, साठीका, श्री अमर राजपूत छात्रावास नागौर, आयुवान निकेतन कुचामनसिटी, श्री हनुवंत छात्रावास कुचामनसिटी और नैणिया में कार्यक्रम आयोजित हुए। जालौर संभाग के पाली प्रांत में वीर दुर्गादास छात्रावास पाली, बड़ी पोल शाखा धींगाणा, जूना महादेव मंदिर जोजावर, रावली पोल गुडांगिरी, रावली पोल सिराणा, सारंग वास, शिव मंदिर परिसर छोटी रानी, वीरबाला छात्रावास खीमेल, गोडवाड राजपुत सभा भवन सुमेरपुर, खिन्दारागांव, श्री झुंझार बावजी मन्दिर प्रांगण साण्डिया, श्री खारेश्वर महादेव मंदिर फालना, कपुड़ी, रायपुर, राजपुत छात्रावास निम्बली नाड़ी, गुड़ा रामसिंह और इन्दरवाडा में कार्यक्रम रखे गए। जालौर के धवला, प्रतापगढ़, थूम्बा, वलदरा, पांचोटा, रोडला, आशापुरा क्षत्रिय कल्याण संस्थान रानीवाड़ा व श्री राव बल्लूजी छात्रावास सांचौर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। श्री महाराव सुरताण क्षत्रिय शिक्षण संस्थान, सिरोही में भी कार्यक्रम रखा गया। बीकानेर में शहर स्थित गांधी पार्क में और लूणकरणसर, नोखा, भलूरी में कार्यक्रम आयोजित हुए। इसी प्रकार जैसलमेर संभाग में तनाश्रम (जैसलमेर), जवाहिर राजपूत छात्रावास जैसलमेर, श्री गिरधर विद्या मंदिर जैसलमेर, भटियाणी छात्रावास जैसलमेर, मरु भगवती संस्थान झिनझिनयाली, माधोपुरा मोढ़ा, तेजमालता, धिरपुरा (बिरमाणी), रणधा, गायत्री शिक्षण संस्थान लखा, तेमड़ेरॉय संस्थान तेजमालता, पदम सिंह की ढाणी झिनझिनयाली, इन्द्र सिंह की ढाणी तेजमालता, देवड़ा, गजसिंह का गांव, बिंदराजा रॉयल कलेक्शन फतेहगढ़, आईनाथ मंदिर तेजमालता, पूनमनगर, बड्डा, भोजराज की ढाणी रामगढ, जोगा, सेरावा, सोनू, सांखला, मोहनगढ़, सेऊवा, राघवा, बैरसियाला, मूलाना, राजगढ़, श्री दयाल राजपुत छात्रावास पोकरण, भेंसडा, ताड़ना, बोड़ाना और रामदेवरा में स्थापना दिवस एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित हुए। जोधपुर संभाग में हनवंत छात्रावास जोधपुर, सरदार छात्रावास जोधपुर, तनायन जोधपुर, राजेन्द्र नगर जोधपुर, सेखाला, सरस्वती छात्रावास सेतरावा, हरि ओम छात्रावास सेतरावा, नाहर सिंह नगर, मदासर डेडा, साथिन, खारिया खंगार, बाप और धोलिया में कार्यक्रम हुए। मल्लिनाथ छात्रावास स्टेशन रोड बाड़मेर, कॉलेज छात्रावास बाड़मेर, जय भवानी छात्रावास गांधीनगर बाड़मेर और कृष्णा छात्रावास दान जी की होदी में भी कार्यक्रम हुए। गुड़ामालानी प्रांत में बूठ गांव, बेसलानिया का तला, मांगता, रावली ढाणी हाथीतला, बाछला, राणासर, धोरीमना, गुडामालानी, उण्डखा और मीठडा में कार्यक्रम हुए। मातेश्वरी शाखा मैदान भिंयाड़, श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस चौहटन, दुधवा, आकोड़ा, तारातरा, सनाऊ, श्री भवानी शिक्षण संस्थान सेड़वा, गंगासरा में भी कार्यक्रम हुए। बालोतरा संभाग में वीर दुर्गादास छात्रावास बालोतरा, रेवाड़ा जैतमाल, राजपूत छात्रावास पादरू, कल्ला रायमलोत राजपूत बोर्डिंग सिवाणा, नागणेची मंदिर टापरा, खंडप और कुण्डल में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। शेखावाटी संभाग में दुर्गा महिला विकास संस्थान, कल्याण राजपूत छात्रावास सीकर, बिंजासी (सीकर), तिगड़ाना (हरियाणा), तारानगर (चूरू), राजपूत छात्रावास रतनगढ़ और दस्सूसर में कार्यक्रम आयोजित हुए। श्री भूपाल नोबल्स संस्थान उदयपुर, श्री आंजनेश्वर महादेव देवगढ़ (राजसमंद), श्री अंबिका बाणेश्वरी छात्रावास प्रतापगढ़, चौबीसा समाज भवन बेणेश्वर धाम डूंगरपुर, सादलवा, शहीद मेजर नटवर सिंह शक्तावत स्टेडियम गंगरार और राजपूत छात्रावास कुंदन नगर अजमेर में भी कार्यक्रम रखे गए। रूपवास (भरतपुर), सूरतगढ़ (गंगानगर) में भी कार्यक्रम हुए। सारोली (सूरत), श्री चामुंडा माता मंदिर नांदुर (महाराष्ट्र) में एवं उत्तरप्रदेश के गुलालपुर (जौनपुर) में भी कार्यक्रम हुए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org